ca | Foundation

LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 2

राजा, किसान और नगर

(आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएं)

भाग - 4

प्रीतेश जोशी

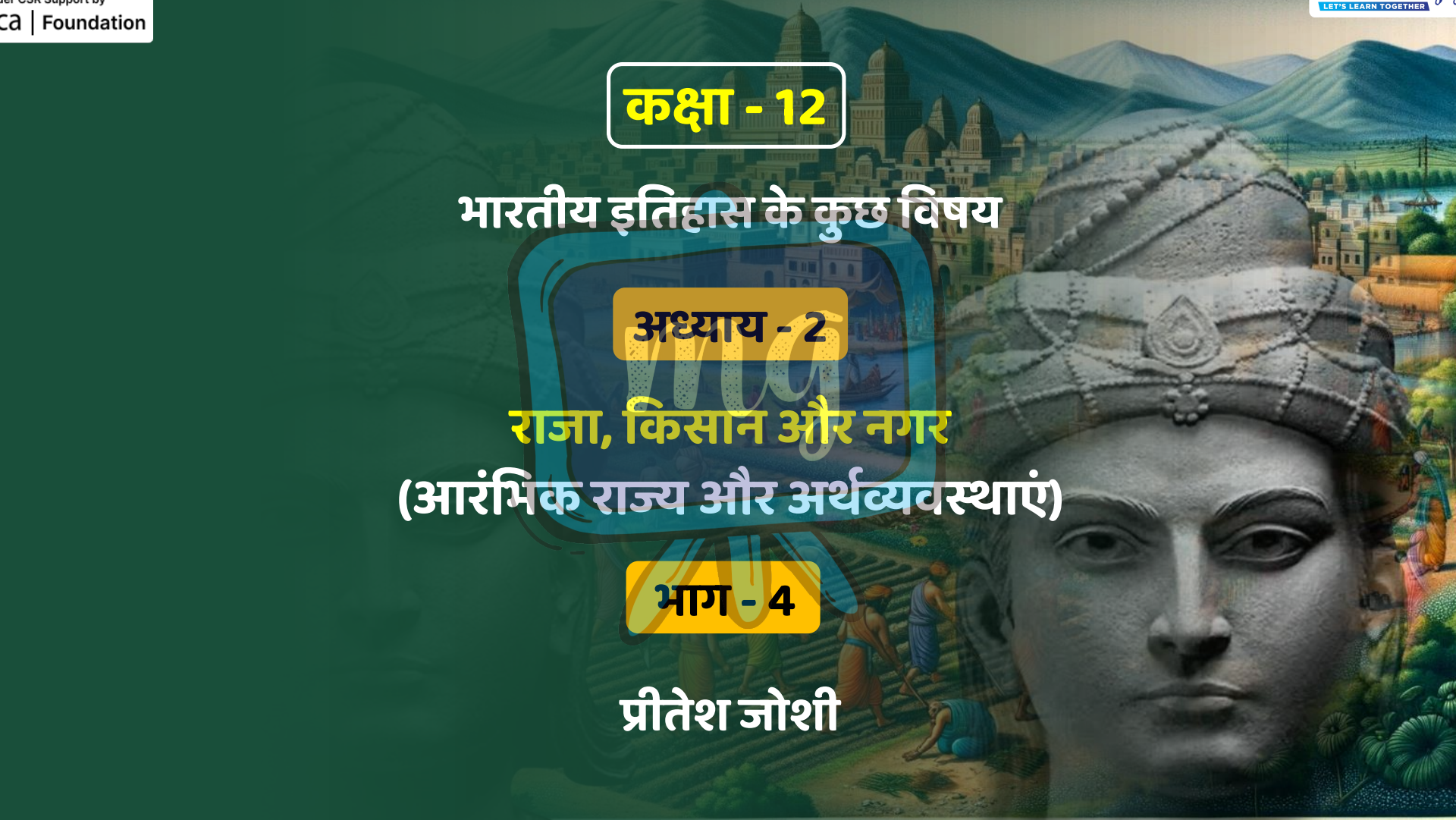

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मौर्य साम्राज्य का महत्व–

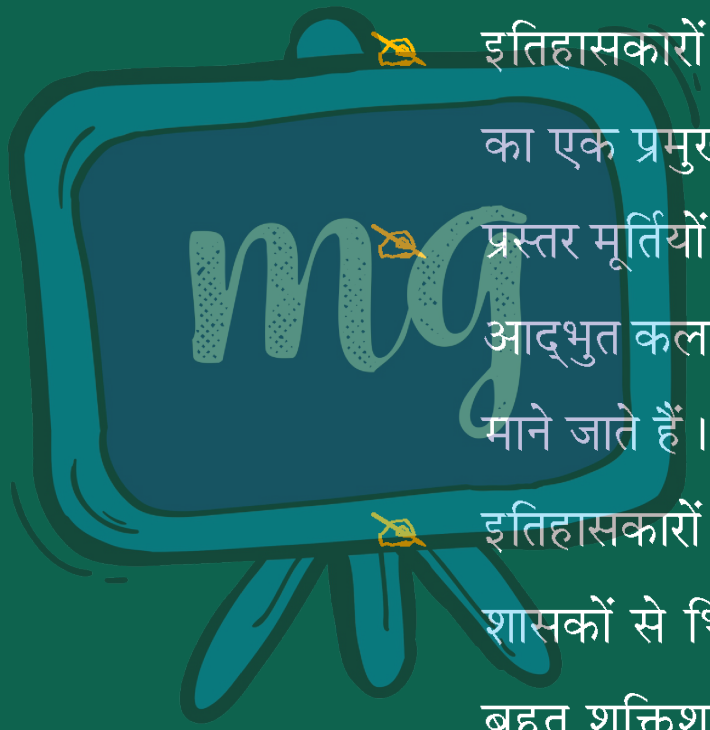

- इतिहासकारों ने मौर्य साम्राज्य को भारतीय इतिहास का एक प्रमुख काल माना है।
- प्रस्तर मूर्तियों सहित मौर्यकालीन सभी पुरातत्व एक आद्भुत कला के प्रमाण थे जो साम्राज्य की पहचान माने जाते हैं।
- इतिहासकारों के अनुसार असोक के अभिलेख अन्य शासकों से भिन्न हैं अत: उनहोंने असोक को एक बहुत शक्तिशाली एवं परिश्रमी शासक माना। साथ ही वे बाद के उन राजाओं से विनीत थे जो अपने नाम के साथ बड़ी बड़ी उपाधियां जोड़ते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

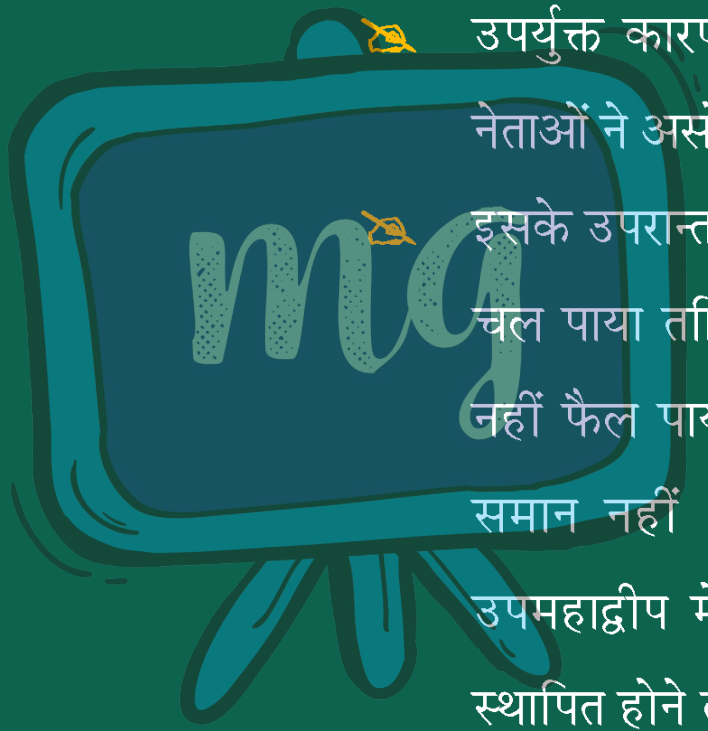

- उपर्युक्त कारणों से ही बीसवीं सदी के राष्ट्रवादी नेताओं ने असोक को अपनी प्रेरणा का स्त्रोत माना।
- इसके उपरान्त भी मौर्य साम्राज्य मात्र 150 वर्ष ही चल पाया तथा यह उपमहाद्वीप के सभी क्षेत्रों में नहीं फैल पाया था। पूरे साम्राज्य में नियंत्रण भी समान नहीं था तथा इसके अंत के साथ ही उपमहाद्वीप में कई नये नये शासक व रजवाड़े स्थापित होने लगे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

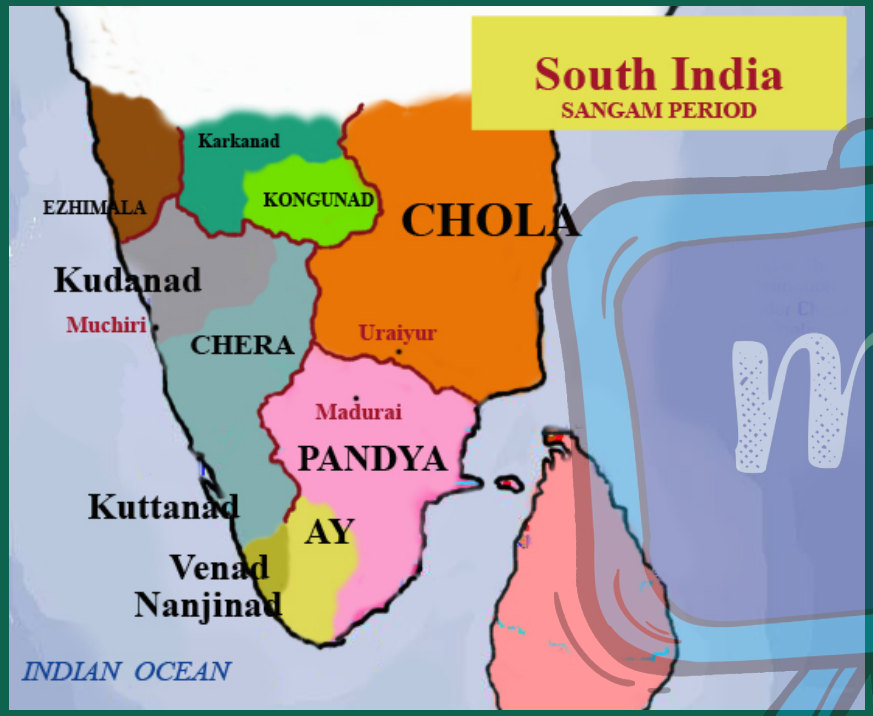

राजधर्म के नवीन सिद्धांत

दक्षिण के राजा और सरदार :-

- उपमहाद्वीप के दक्कन और उससे दक्षिण के क्षेत्र में स्थित तमिलकम (तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और केरल) में (i) चोल, (ii) चेर, (iii) पाण्ड्य जैसी सरदारियों का उदय हुआ।
- ये राज्य बहुत ही समृद्ध और स्थायी सिद्ध हुए।
- प्राचीन तमिल संगम ग्रंथों में सरदारियों का विवरण है। इससे इन सरदारों की जानकारी मिलती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

संगम काल

R. S. Sharma - 300-600 ई.

'प्राचीनतम साहित्य तमिल भाषा'

पाण्ड्य ——— 1) मदुरा
2) कपाटपुरम
3) मदुरा

तोल्लकापियम
(व्याकरण ग्रंथ)



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सरदारी क्या है?



* वंशानुगत/नहीं
* कार्य
  - अनुष्ठान
  - युद्ध
  - मध्यस्थता

सरदार और सरदारी :-

- सरदार एक शक्तिशाली व्यक्ति होता है जिसका पद वंशानुगत भी हो सकता है और नहीं भी।
- सरदारों के समर्थक उसके खानदान के लोग होते थे।
- कार्य – (i) विशेष अनुष्ठानों का संचालन
  (ii) युद्ध के समय नेतृत्व करना
  (iii) विवादों में मध्यस्थता करके सुलझाना
- वह अपने अधीन लोगों में भेंट लेता था। (जबकि राज्य कर-वसूली करते हैं) तथा उसके समर्थकों में उस भेंट का वितरण करता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





- सरदारी में सामान्यतया कोई स्थायी सेना या अधिकारी नहीं होते हैं।
- कई सरदार और राजा लम्बी दूरी के व्यापार द्वारा राजस्व जुटाते थे इसके 2 उदाहरण हैं –
  - (i) सातवाहन शासक (200 ई. पू. – 200 ई.)– मध्य एवं पश्चिमी भारत के क्षेत्रों पर शासन था।
  - (ii) शक शासक मध्य एशियाई मूल के – पश्चिमोत्तर और पश्चिम के भागों पर शासन था।
- सातवाहन शासकों ने एक बार सत्ता में आने के बाद ऊँचे सामाजिक अस्तित्व का दावा कई प्रकार से किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



कोवलन कण्णगी

भेटों के उदाहरण का एक स्त्रोत

पाण्ड्य सरदार सेनगुत्तुवन की वनयात्रा

(तमिल महाकाव्य – सिलप्पादिकारम् का अंश)

जब वह वन की यात्रा पर थे तो लोग नाचते-गाते हुए पहाड़ों से ठीक उसी प्रकार से उतरे जैसे पराजित होकर विजयी का आदर करते हैं।

वे अपने साथ उपहार – हाथी दाँत, सुगन्धित लकड़ी, हिरणों के बालों के बने चँवर, मधु, चंदन, गेरू, सुरमा, हल्दी, इलायची, मिर्च लाये।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

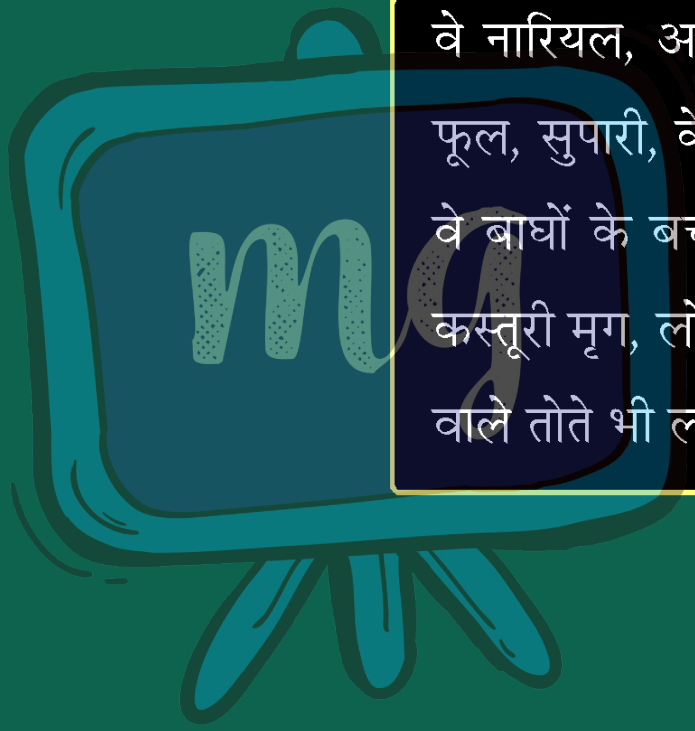

वे नारियल, आम, जड़ी बूटी, फल, प्याज, गन्ना, फूल, सुपारी, केला भी लाये।

वे बाघों के बच्चे शेर, हाथी, बंदर, भालू, हिरण, कस्तूरी मृग, लोमड़ी, मोर, जंगली मुर्गे तथा बोलने वाले तोते भी लाये।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

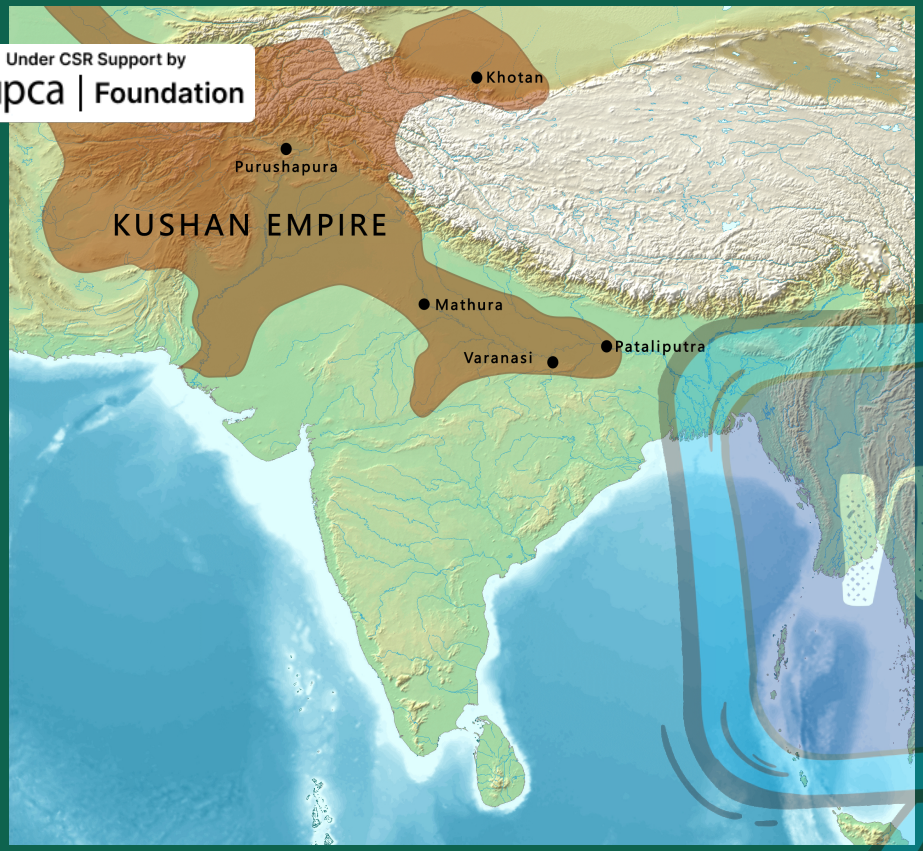

दैविक राजा :-

- राजाओं के लिए उच्च स्थिति प्राप्त करने का एक साधन विभिन्न देवी देवताओं के साथ जुड़ना था।

कुषाण :-

- मध्य एशिया से लेकर पश्चिमोत्तर भारत तक शासन करने वाले कुषाण शासकों ने (100 ई. पू. – 100 ई. तक)। इस उपाय का सबसे अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया।
- भारत में कुषाण वंश का पहला विख्यात शासक कुजुल-कडफिसस था। इसने अपने सिक्कों को रोमन सम्राट आगस्टस के सिक्कों के अनुरूप जारी किया।

भारतीय साहित्य - सिथियन

युची कबीला ⟶ ऽ शाखा

↓

चाऊ आंग शाखा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कुषाण चीन से मध्य एशिया होते हुए भारत आये थे।
- कनिष्क सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासक हुआ जिसने अपने राज्यारोहण के वर्ष 78 ई. से एक नये संवत शक संवत. चलाया।
- कनिष्क ने कैसर या सीजर की उपाधि धारण की। उसकी प्रथम राजधानी पेशावर तथा दूसरी मथुरा थी। उसने कश्मीर जीतकर वहां कनिष्कपुर नगर बसाया।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- असोक के बाद कनिष्क ही बौद्ध धर्म का प्रबल समर्थक था। उसने बौद्ध विहारों, चैत्यों, स्तूपों का निर्माण कराया।
- कनिष्क ने चीन से रोम को जाने वाली सिल्क मार्ग पर अपना नियंत्रण स्थापित किया।
- इसे द्वितीय असोक भी कहते हैं।
- अश्वघोष (साहित्यकार), नागार्जुन (दार्शनिक और वैज्ञानिक) वसुमित्र तथा चरक (राजवैद्य) उसके दरबारी थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

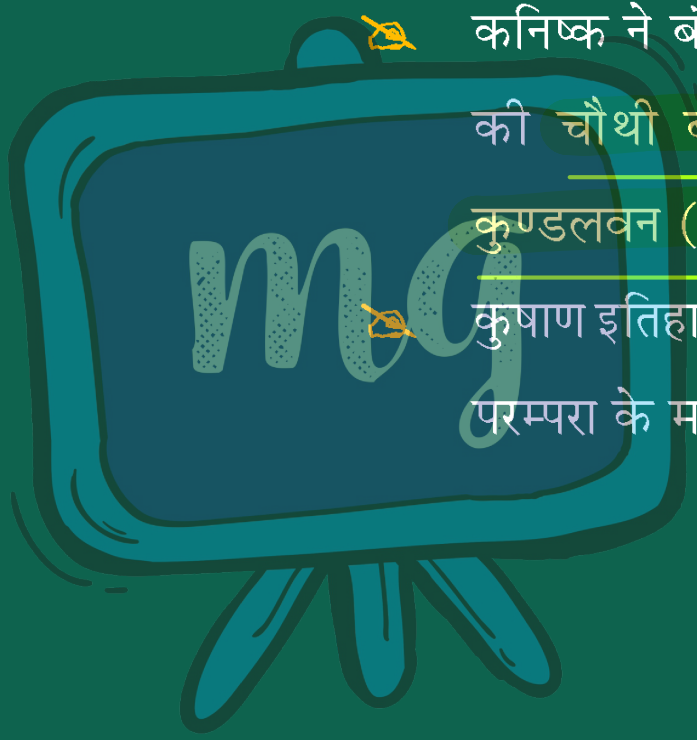

- कनिष्क ने बौद्ध धर्म को बढ़ावा दिया यहां तक की चौथी बौद्ध संगिति भी कनिष्क ने ही कुण्डलवन (कश्मीर) में प्रारम्भ की।
- कुषाण इतिहास की रचना अभिलेखों और साहित्य परम्परा के माध्यम से की गयी है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कुषाण जिस प्रकार का राजधर्म प्रस्तुत करना चाहते थे। उसका प्रमाण उनके सिक्के व मूर्तियां देती हैं।

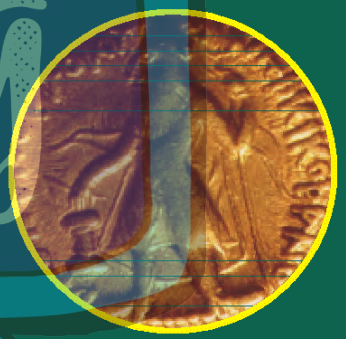



एक कुषाण सिक्का

अग्र भाग –कनिष्क

पृष्ठ भाग – देवता

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उत्तरप्रदेश में मथुरा के पास माट के एक देवस्थान पर कुषाण शासकों की विशालकाय मूर्तियां बनायी गयी थी। अफगानिस्तान के एक देवस्थान पर भी इसी प्रकार की मूर्तियां मिली हैं।



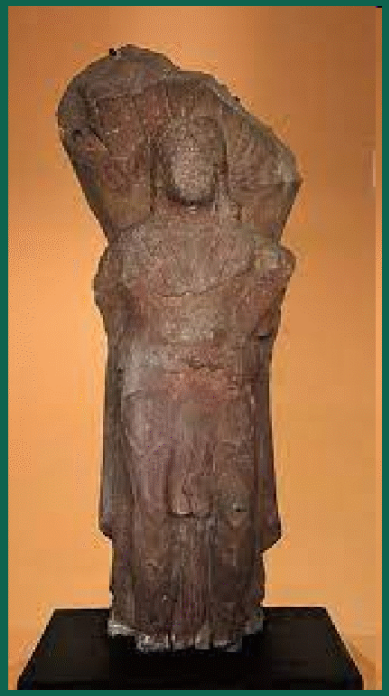

- इतिहासकारों का मानना है कि इन मूर्तियों के जरिये कुषाण स्वयं को देवतुल्य प्रस्तुत करना चाहते थे।
- कई कुषाण शासकों ने अपने नाम के आगे देवपुत्र की उपाधि भी लगाई थी। संभवत: वे उन चीनी शासकों से प्रेरित हुए होंगे जो स्वयं को स्वर्गपुत्र कहते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

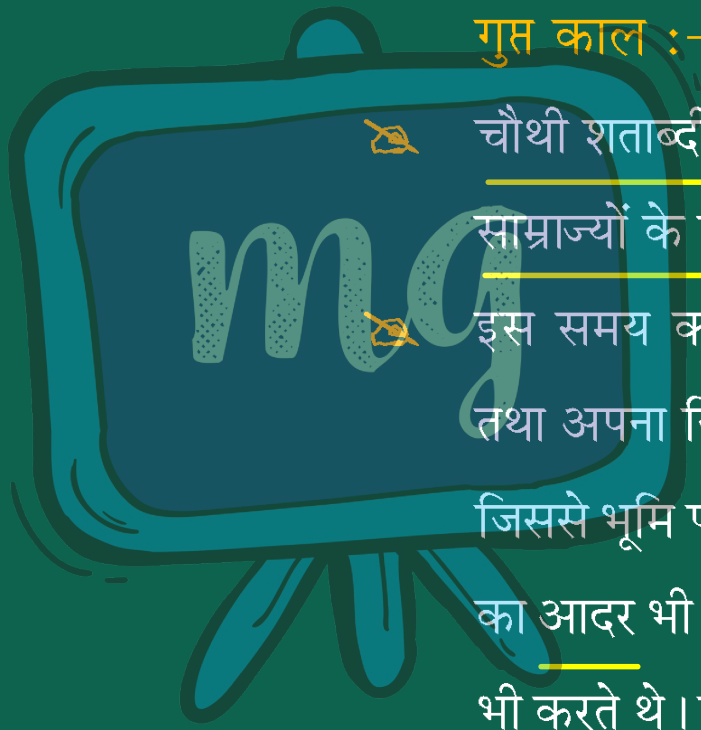

गुप्त काल :-

- चौथी शताब्दी ई. में गुप्त साम्राज्य सहित कई बड़े साम्राज्यों के साक्ष्य मिलते हैं।
- इस समय कई साम्राज्य सामन्तों पर निर्भर थे। तथा अपना निर्वाह स्थानीय संसाधनों से करते थे जिससे भूमि पर नियंत्रण भी शामिल था। वे शासकों का आदर भी करते थे और उनकी सैनिक सहायता भी करते थे। जो सामंत शक्तिशाली होते थे वे राजा भी बन जाते थे और जो राजा दुर्बल होते थे, वे बड़े शासकों के अधीन हो जाते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

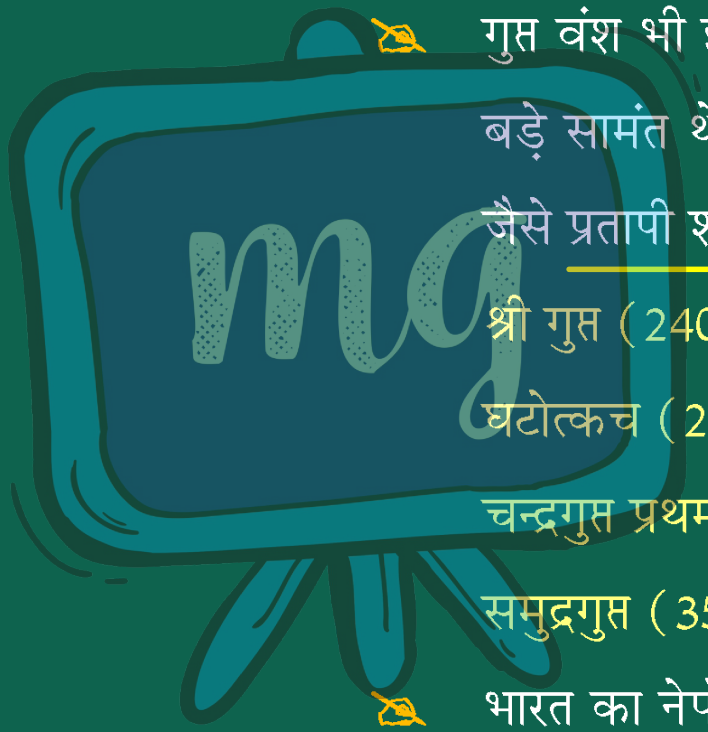

- गुप्त वंश भी इसके संस्थापक श्री गुप्त जो कि एक बड़े सामंत थे, से प्रारम्भ होकर चंद्रगुप्त, समुद्रगुप्त जैसे प्रतापी शासकों तक पहुंचा।

  श्री गुप्त (240 – 280 ई.) संस्थापक

  घटोत्कच (280 – 319 ई. तक)

  चन्द्रगुप्त प्रथम (319 – 350 ई. तक)

  समुद्रगुप्त (350 – 375 ई. तक)

- भारत का नेपोलियन भी कहते हैं। चंद्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त, स्कन्दगुप्त, आदि प्रतापी शासक है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

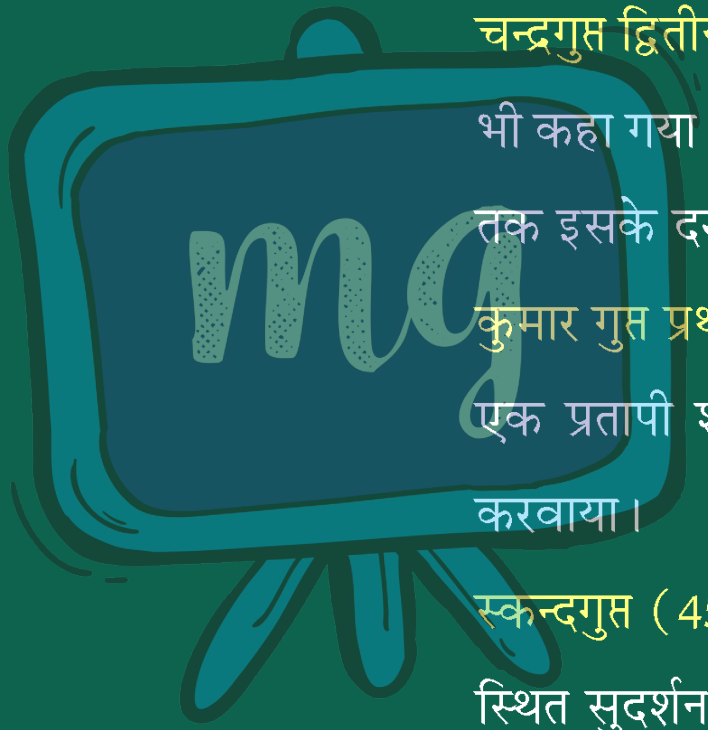

चन्द्रगुप्त द्वितीय (375 – 415 ई.) – विक्रमादित्य भी कहा गया। चीनी यात्री फाह्यान (405 – 411) तक इसके दरबार में रहा।

कुमार गुप्त प्रथम (415 – 455 ई.) – यह भी एक प्रतापी शासक था जिसने अश्वमेघ यज्ञ भी करवाया।

स्कन्दगुप्त (455 – 467 ई.) – गिरनार पर्वत पर स्थित सुदर्शन झील का अपने गवर्नर चक्रपालित द्वारा पुर्ननिर्माण करवाया।

अंतिम सफल शासक था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

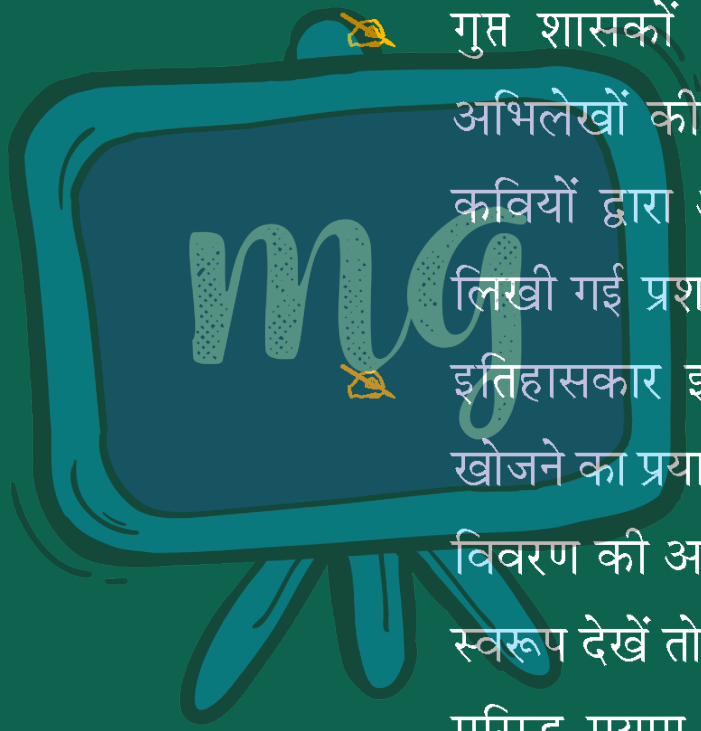

- गुप्त शासकों का इतिहास साहित्य, सिक्कों और अभिलेखों की सहायता से लिखा गया है। साथ ही कवियों द्वारा अपने राज्य या स्वामी की प्रशंसा में लिखी गई प्रशस्तियां भी उपयोगी रही है।
- इतिहासकार इन रचनाओं के आधार पर इतिहास खोजने का प्रयास करते हैं लेकिन ये रचनाऐं तथ्यात्मक विवरण की अपेक्षा काव्यात्मक ग्रंथ ही है। उदाहरण स्वरूप देखें तो इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख के नाम से प्रसिद्ध प्रयाग प्रशस्ति की रचना हरिषेण ने की जो संभवतः सर्वाधिक शक्तिशाली सम्राट समुद्रगुप्त के राजकवि थे, ने संस्कृत में की थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

समुद्रगुप्त की प्रशस्ति

प्रयाग प्रशस्ति का अंश

धरती पर उनका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं था। अनेक गुणों और शुभकार्यों से सम्पन्न उन्होंने अपने पैर के तलवे से अन्य राजाओं के यश को मिटा दिया है। वे परमात्मा पुरूष हैं। साधु (भले) की समृद्धि और असाधु (बुरे) के विनाश के कारण हैं। वे अज्ञेय हैं। उनके कोमल हृदय को भक्ति और विनय से ही वश में किया जा सकता है। वे करूणा से भरे हुए हैं। वे अनेक सहस्त्र गायों के दाता है। उनके मस्तिष्क की दीक्षा दीन-दुखियों, विरहणियों और पीड़ितों के उद्धार के लिए की गयी है। वे मानवता के लिए दिव्यमान उदारता की प्रतिमूर्ति हैं। वे देवताओं में कुबेर (धन देव), वरूण (समुद्र देव), इन्द्र (वर्षा के देवता) और यम (मृत्यु देव) के तुल्य हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

